Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं विषय - हिन्दी साहित्य
दिनांक 22 अप्रैल, 2024 शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-10 'दो कलाकार' (कहानी) लेखिका - मन्नू भण्डारी

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या 64 पर दिए पाठ-10 'दो कलाकार' का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम पाठ-10 'दो कलाकार' पढ़ने जा रहे हैं। आप अपनी-अपनी पुस्तक पर दिए पाठ-10 निकाल लें और एक उत्तर-पुस्तिका भी साथ लेकर बैठें। पाठ के मध्य आपसे पाठ से संबंधित कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। उन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आपको तीन मिनट दिए जाएँगे। उन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आपका पाठ को ध्यानपूर्वक सुनना एवं समझना आवश्यक है। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो ! पिछले सप्ताह हमने इस कहानी को पृष्ठ संख्या सड़सठ तक समाप्त किया था। आइए, इस कहानी को पृष्ठ संख्या सड़सठ तक संक्षेप में जान लेते हैं।
प्रस्तुत कहानी में दो कलाकारों का चित्रांकन किया गया है। अरुणा और चित्रा दोनों सहेलियाँ हैं। दोनों होस्टल के एक कमरे में रहती हैं। अरुणा समाज सेवा के कार्यों में व्यस्त रहती है। वह निर्धन तथा असहाय बच्चों को मैदान

में बिठाकर बिना स्कूल के ही पढ़ाती हैं। इसके विपरीत चित्रा एक चित्रकार है। वह धनी पिता की इकलौती पुत्री है। वह हर समय चित्र बनाने में व्यस्त रहती है। उसके जीवन का उद्देश्य एक महान चित्रकार बनना है। दोनों में अपनी कला और जीवन को लेकर लंबी-चौड़ी बहसें होती रहती थीं। एक दिन चित्रा के पिता जी का पत्र आता है। वह अमीर पिता की इकलौती संतान है। उसके पिता चित्रा को कोर्स समाप्त कर विदेश जाने की अनुमति दे देते हैं।

तेज़ मूसलाधार वर्षा के कारण बाढ़ आ जाती है। बाढ़-पीड़ितों की दशा बिगड़ने की बात जान अरुणा उनके लिए चंदा इकट्ठा करती है और स्वयं सेवकों के दल के साथ बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए जाती है। जब वह पंद्रह दिन बाद लौटती है तो उसकी हालत काफी खस्ता हो चुकी थी। लौटने पर उसे चित्रा के एक सप्ताह बाद विदेश जाने की बात पता चलती है। छः साल साथ रहने के बाद चित्रा से अलग होने की बात सुन अरुणा उदास हो जाती है।

जिस दिन चित्रा को जाना था चित्रा सबसे मिलने के बाद गुरु जी का आशीर्वाद लेने गई लेकिन काफी देर तक नहीं लौटी। चित्रा की गाड़ी का समय हो रहा था इसलिए अरुणा को चिंता होने लगी।

बच्चो! अब कहानी को आगे विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। चित्रा के आने पर उसने अरुणा को देरी होने का कारण बताते हुए कहा कि 'गर्ग स्टोर' के सामने पेड़ के नीचे बैठी रहने वाली भिखारिन मरी पड़ी थी और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह से रो रहे थे। उसने झट से उस दृश्य का रफ स्केच बना डाला। बहुत सारी लड़कियों ने चित्रा का सामान बाँधने में उसकी सहायता की और साढ़े चार बजे चित्रा होस्टल के फाटक पर आ गई पर अरुणा वहाँ नहीं थी। सभी लड़कियाँ चित्रा को छोड़ने स्टेशन तक भी गईं पर अरुणा न जाने कहाँ गायब थी।

चित्रा की आँखें लगातार अरुणा को ही ढूँढ़ रही थीं। पाँच बजे जब रेल चलने लगी तब तक भी अरुणा नहीं आई थी। चित्रा विदेश जाकर तन-मन से अपने कार्य में लग गई। विदेशों में उसके चित्रों की खूब प्रशंसा की गई। भिखारिन और उसके रोते हुए दो बच्चों वाले चित्र की तो धूम-सी मच गई। चित्रा अपने कार्य में इतनी व्यस्त हो गई कि पहले साल तो अरुणा से पत्र-व्यवहार चला परन्तु बाद में बंद हो गया। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका अनाथ शीर्षक वाला चित्र प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर चुका था।

तीन साल बाद जब चित्रा अपनी पढ़ाई पूरी करके विदेश से भारत लौटी तो चित्रा को अपने बनाए हुए चित्रों पर काफी प्रसिद्धि मिल चुकी थी। अखबारों में भी चित्रा की प्रसिद्धि की चर्चा होने लगी। इस सफलता से चित्रा के पिता बहुत प्रसन्न थे। एक बार दिल्ली में चित्रा के चित्रों की भव्य प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। इसके उद्घाटन के लिए चित्रा को ही बुलाया गया। अरुणा भी यह प्रदर्शनी देखने आई थी। यहीं पर चित्रा और अरुणा की मुलाकात हुई। अरुणा के साथ दो बच्चे भी खड़े थे। लड़का लगभग दस वर्ष का होगा और लड़की की आयु लगभग आठ वर्ष की होगी। अरुणा ने चित्रा को बताया कि ये दोनों बच्चे उसके हैं। अरुणा ने अपने बच्चों को चित्रा का परिचय देते हुए कहा कि ये तुम्हारी चित्रा मौसी हैं। तुम्हारी मौसी बहुत अच्छे चित्र बनाती हैं। इस प्रदर्शनी में रखे सभी चित्र इन्हीं के बनाए हैं। अरुणा अपने बच्चों को चित्रा का परिचय एक महान चित्रकार के रूप में करवाना चाहती थी। अरुणा के बच्चों को देखकर चित्रा को विश्वास नहीं हो रहा था। इसी अविश्वास को दूर करने के लिए कभी वह अरुणा को देखती है तो कभी उसके बच्चों को। अरुणा के बच्चों ने अपनी मौसी से प्रदर्शनी में रखे सभी चित्रों को दिखाने की फ़रमाइश की। बच्चों की इस फ़रमाइश पर चित्रा उन्हें चित्र दिखाने लगी। चित्र देखते-देखते वे लोग भिखारिन वाले चित्र

चित्र के पास पहुँचे, जिसमें दिखाया गया था कि एक मरी भिखारिन से उसके दोनों बच्चे उसके साथ चिपक कर रो रहे थे। चित्रा ने बच्चों को बताया कि इस 'अनाथ' शीर्षक वाले चित्र की वजह से ही उसे इतनी प्रसिद्धि मिली है। चित्र को देखकर अरुणा की लड़की ने चित्र में उन बच्चों के रोने का कारण पूछा तो उसके भाई ने समझदारी का परिचय देते हुए बताया कि इनकी माँ मर गई है। चित्रा ने बच्चों को बताया कि यह चित्र उसने वास्तविक घटना को देखकर ही बनाया था। यह बात सुनकर बच्चे विचलित हो गए। उन्होंने चित्रा से अच्छी-अच्छी जैसे राजा-रानी और परियों की तस्वीरें दिखाने को कहा। तभी अरुणा के पति वहाँ आ गए। अरुणा ने अपने पति से बच्चों को प्रदर्शनी दिखाने के लिए कहा और कहा कि मैं चित्रा को लेकर घर चलती हूँ। बच्चे न चाहते हुए भी अपने पिता जी के साथ चले गए। चित्रा को अरुणा के दोनों बच्चे बहुत प्यारे लगे। वह उन्हें तब तक देखती रही जब तक कि वे आँखों से ओझल न हो गए।

अरुणा ने उन बच्चों को अपने बच्चे बताकर चित्रा से उन्हें मिलवा तो दिया लेकिन चित्रा के मन में यह विचार बार-बार आ रहा था कि ये बच्चे अरुणा के कैसे हो सकते हैं। वह सोच में पड़ गई कि जब चित्रा अरुणा को भारत में छोड़कर विदेश गई थी तब उसकी शादी भी नहीं हुई थी। अब तीन साल बाद अरुणा की आठ वर्ष की लड़की और दस वर्ष का लड़का देखकर चित्रा को विश्वास नहीं हो रहा था कि ये बच्चे अरुणा के हैं। उसने (चित्रा ने) एकान्त पाकर अरुणा से पूछा कि ये बच्चे किसके हैं? पहले तो अरुणा ने उसे यह कहकर टाल दिया कि ये दोनों बच्चे उसी के हैं। लेकिन जब चित्रा नहीं मानी तब अरुणा ने बताया कि ये दोनों बच्चे उसी भिखारिन के हैं; जिसकी मृत्यु हो गई थी। अरुणा के पति ने भी उन बच्चों को अपना लिया। यह बात जानकर चित्रा की

आँखें विस्मय से फैल गई। वह सोचने लगी कि अरुणा अपने समाज-सेवा के कार्य में उससे कहीं ऊँचे दर्जे पर है। यह कार्य प्रशंसनीय है। अरुणा ने गरीब भिखारिन के दोनों बच्चों को गोद लेकर उनके पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी ली है। अरुणा की समाज सेवा व उच्च कोटि के कलाकार होने की बात सोचकर चित्रा निरुत्तर हो गई। अरुणा की प्रशंसा में कहने के लिए चित्रा के पास शब्द नहीं थे। अब चित्रा की नज़र में अरुणा एक आदर्श कलाकार बन गई।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट का विराम देंगे एवं उन प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न 1. विदेश से लौटने पर चित्रा के चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन कहाँ किया गया?

प्रश्न 2. अरुणा के साथ कौन खड़े थे?

प्रश्न 3. चित्रा किस बात पर अवाक् (हैरान) थी?

बच्चो! उत्तर लिखने के लिए दी गई अवधि अब समाप्त चुकी है। आशा करती हूँ कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। उन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं:-

उत्तर 1. विदेश से लौटने पर चित्रा के चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन दिल्ली में किया गया तथा उसका उद्घाटन करने चित्रा को ही बुलाया गया।

उत्तर 2. अरुणा के साथ दो बच्चे खड़े थे। लड़का लगभग दस साल का होगा और लड़की लगभग आठ साल की होगी। अरुणा ने बताया कि ये बच्चे उसी के हैं।

उत्तर 3. जब अरुणा ने चित्रा से कहा कि वे दोनों बच्चे उसके हैं। उसके लिए यह विश्वास करना कठिन था इसलिए चित्रा अवाक् थी।

बच्चो! आज हमारा यह पाठ समाप्त हो चुका है। आशा है कि आपने इस पाठ को रुचि से पढ़ा एवं समझा होगा। सभी छात्र इस पाठ को दो-तीन बार ऊँचे स्वर में अवश्य पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही

हूँ। इस कार्य को सभी छात्र पाठ की सहायता से साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में करेंगे।

★ गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

"कहा तो मेरे!" अरुणा ने हँसते हुए कहा।
"अरे बता न, मुझे ही बेवकूफ़ बनाने चली है।"

प्रश्न (क) "कहा तो मेरे" — वाक्य का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न (ख) "मुझे ही बेवकूफ़ बनाने चली है" — वाक्य का संदर्भ स्पष्ट करते हुए बताइए कि वक्ता को श्रोता की किस बात पर विश्वास नहीं हुआ और क्यों?

प्रश्न (ग) अरुणा की कौन-सी बात सुनकर चित्रा की आँखें फैली की फैली रह गईं?

प्रश्न (घ) चित्रा को किस चित्र से प्रसिद्धि मिली थी? चित्र का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]